# लो, इंडिया ने तो तरक्की कर ली

अपना मुल्क तेजी से तरक्की कर रहा है और जैसा कि एक पुराने प्रेसिडेंट फरमा गए हैं, 2020 तक इसे अमेरिका और जापान जैसे विकसित मुल्कों के क्लब में शामिल हो जाना है। मैं कुछ अरसे से सोचता रहा हूं कि तरक्की को हम कैसे नाप सकते हैं? एक तरीका तो वह है, जिसे इकानॉमिस्ट अपनाते हैं और जिसमें जीडीपी और प्रति व्यक्ति आय को पैमाना बनाया जाता है। एजुकेशन, रोजगार और खर्च करने की हैसियत भी ऐसे तरीके हो सकते हैं। लेकिन दरअसल ये सभी एब्सट्रेक्ट (अमूर्त) औजार हैं। असल बात यह जानना है कि तरक्की हमारी सोसाइटी की रोजमर्रा की जिंदगी में किस तरह नजर आ रही है। यानी वे क्या बातें हैं, जो हमें बदल गई दिखाती हैं? अगर हम उन्हें पहचान लेते हैं तो तरक्की के सोशल स्टैंडर्ड हमें मिल जायेंगे।

इस बार मैंने इंडिया की तरक्की के ऐसे ही सोशल पैमाने तय करने की कोशिश की है। इनमें सबसे पहले है गंदगी। गंदगी हमारी तरक्की का नया एनवायरनमेंटल इफेक्ट है। भारत की धरती का कोई हिस्सा आज ऐसा नहीं बचा, जहां कचना न फैला हो। शहरों में तो कचरे के पहाड़ हर रोज खड़े हो ही रहे हैं, दूरदराज के इलाकों में भी प्लास्टिक के रैपर बिखरते जा रहे हैं। नालों में बदलती हमारी नदियां, उजड़ती हरियाली और उस पर यह गंदगी इस बात की गवाही है कि भारतीयों का कंजंप्शन तो बढ़ ही गया है, वह फैल भी रहा है। हम पहले से कई गुना ज्यादा खा, पी और पहन रहे हैं, जो कि आमदनी बढ़े बिना नहीं हो सकता था। प्लास्टिक के रैपर अपने आप में खुशहाली का सिंबल है, क्यों कि तरक्की के एक लेवल के बाद ही आदमी खुली चीजें छोड़ कर महंगे प्रोसेस्ड प्रॉडक्ट का इस्तेमाल कर पाता है। अमेरिकियों के खाने की हर चीज डिब्बाबंद होती है। भगवान की कृपा रही तो हम भरतीय भी जल्द ही उनकी बराबरी करेंगे।

मेरी लिस्ट में दूसरी चीज है गालियां। इस मामले में हम इंडियन पहले भी फॉरवर्ड रहे हैं। बहुत पुराना और दमदार ट्रेडिशन रहा है हमारे यहां गालियों का। इसे एक तरह का कल्चरल आशीर्वाद तक हासिल है (जैसे होली पर), लेकिन रोजमर्रा की पब्लिक लाइफ में लोग इनसे परहेज करते थे। घरों में सिखाया जाता था कि गाली देना पाप है। अच्छी जबान एजुकेटेड और एडवांस्ड होने की पहचान हुआ करती थी। लेकिन इधर गालियों की नई परेड एजुकेटेड और एडवांस्ड तबके से ही शुरू हुई है। ट्रेडिशनल इंडियन गालियों में अब अमेरिकन स्लैंग गालियों का जोरदार तड़का लग रहा है और इनकी प्रैक्टिस के लिए टीवी का पर्दा तक हाजिर है। मैं आपका ध्यान इस बात पर दिलाना चाहुंगा कि दरअसल यह ट्रेंड हमारे ग्लोबल होने की पहचान है। गालियों की यह नई खेप हम अमेरिका से ला रहे हैं, जो कि दुनिया का सबसे एडवांस्ड देश है और इस तरह हम तरक्की की नई भाषा सीख रहे हैं।

तीसरे नंबर पर है मोटापा। दुनिया में सबसे ज्यादा मोटे लोग अमेरिका में है, क्योंकि वहां ऐशोआराम की इफरात है। हाल में नैशनल फैमिली हेल्थ सर्वे ने अपने मुल्क के बारे में जो बताया है, वह हमारी तरक्की का पक्का सबूत है। इसके मुताबिक स्कूल जाने वाले 20 पर्सेंट बच्चे ओवरवेट हैं। देश में डायबीटीज, हाइपरटेंशन और ऑर्थराइटिस जैसी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। जल्द ही हम कुछ ऐसी बीमारियों की राजधानी बन जाएंगे, जिन्हें लाइफस्टाइल डिजीज कहा जाता है और जो आमतौर पर गीब पिछड़े लोगों को नहीं हुआ करती है।

रोड रेज यानी सड़कों पर मारपीट (यहां तक कि खून खराबा भी) मेरी लिस्ट में चौथे नंबर पर है। रोड रेज तब होता है, जब सड़कों पर ट्रैफिक ज्यादा हो, लोग इतने बिजी हों कि अपने ठिकाने पर पहुंचने की हड़बड़ी हो, उनके पास ऐसी अच्छी गाड़ियां हो कि उन पर खरोंच से दिल जलता ही और उनकी इतनी हैसियत हो कि वे कानून से डरे बिना दूसरों से निपटना जानते हों और शायद एक रिवॉल्वर भी आफोर्ड कर सकते हों। 20 साल पहले क्या ये सभी फैक्टर एक जगह इकट्ठा हो सकते थे? कतई नहीं। हमने एक लंबा रास्ता तय कर लिया है जनाब!

जो लोग अच्छी तरक्की हासिल कर लेते हैं, उन्हें गुजरे जमाने में झांकने की जरूरत नहीं होती। वे हमेशा आगे की ओर मुंह किए रहते हैं। इसलिए पुरानी चीजों, पुरानी बातों, पुराने लोगों में उनकी दिलचस्पी खत्म हो जाती है। दरअसल पुराना उन्हें तरक्की करने से रोक सकता है, इसलिए वे उससे नफरत करने लगते हैं। पुराने से नफरत के पैमाने से भी हम इंडियन विकसित होते दिख रहे हैं। हम पुरानी इमारतों, स्मारकों, तरीकों और आदतों को कंडम करने में जरा भी देर नहीं करते बुढ़ापा हमारे यहां इज्जत दिलाने वाली चीज नहीं रहा।

इस लिस्ट की सातवीं बात कुछ ऐसी है, जो हमने कहीं से इम्पोर्ट नहीं की है, खुद ही ईजाद की है-नो वोटिंग। एडवांस्ड मुल्कों में लोग आज भी उत्साह से वोट देने निकलते हैं, पर हमारे शहरों के सबसे अच्छे इलाकों में सबसे कम वोटिंग होती है। आप किसी शहर के वोटिंग पैटर्न से जान सकते हैं कि कौन-सा इलाका सबसे पाश होगा। भारतीयों की तरक्की उनहें सरकार और एडमिनिस्ट्रेशन सिस्टम से आजाद कर रही है। तरक्की का मतलब अगर आजादी होता है, तो इंडिया दुनिया को एक नई चीज सिखा सकता है।

तो ये छह चीजें हैं, जो तरक्की की तलाश में मुझे मिलीं। आपको यह लिस्ट भारत के लिए निंदा प्रस्ताव के लिए लगेंगी। यह है भी नेगेटिव लिस्ट की कोई काट उससे होती है या नहीं? दूसरी बात यह है कि कोई भी लिस्ट 10 पर पूरी होती अच्छी लगती है। इस लिस्ट में जो चार एलिमेंट गायब है, क्या वे आपको कहीं नजर आते हैं?

फिलहाल भारत की तरक्की आपको मुबारक हो।